International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 79-83

पत्राचार माध्यम में उच्च शिक्षा की स्थिति

शिवांगी

एम.फिल. शोधार्थी, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

सारांश
मेरठ विश्वविद्यालय से पत्राचार माध्यम से उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की तरफ से प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के स्वरूप को जानना, पत्राचार माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के कारणों का पता लगाना व इस माध्यम से पढ़ाई के बाद विद्यार्थियों को क्या कुछ सीखने को मिलता हैं इन सभी पहलुओं को समझना इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य रहे। यह अध्ययन एक पायलट स्टडी की तरह किया गया जिसका स्वरूप अन्वेषणात्मक है। अध्ययन के पश्चात् निष्कर्ष रूप में पाया गया कि विद्यार्थी सामाजिक, आर्थिक व भौगोलिक कारणों से पत्राचार माध्यम से उच्च शिक्षा ग्रहण करते हैं परंतु विश्वविद्यालय की तरफ से पत्राचार माध्यम से पढाई करने वाले विद्यार्थियों को कोई शैक्षिक सुविधाएँ नही प्रदान की जाती जिसके परिणामस्वरूप वे स्नातक या स्नातकोत्तर की डिग्री तो प्राप्त कर लेते हैं लेकिन सीखने को कुछ ज्यादा नही मिल पाता है।

मूल शब्द: उच्च शिक्षाए, पत्राचार, मेरठ विश्वविद्यालय, ऐतिहासिक परिदृश्य

प्रस्तावना

ऐतिहासिक परिदृश्य

शिक्षा को समाज व व्यक्ति के जीवन में बदलाव का एक सशक्त माध्यम माना जाता है यह व्यक्ति में ऐसे गुणों, कौशलों व ज्ञान का विकास करती है जिससे अपने जीवन को तो व्यक्ति बेहतर बना ही सकता है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वाह भी बेहतर ढंग से कर सकता है। शिक्षा की प्रक्रिया में उच्च शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यह व्यक्ति व समाज दोनों के सतत् विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिस समाज में जितने अधिक व्यक्ति उच्च शिक्षा में संलग्न होते हैं। उस समाज के उतना अधिक प्रगतिशील होने की संभावना होती है। क्योंकि उच्च शिक्षा किसी भी देश के आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक विकास के साथ–साथ सामाजिक अपेक्षाओं को भी पूर्ण करती है। उच्च शिक्षा के इस महत्त्व को देखते हुए उच्च शिक्षा को पुर्नावलोकन करना आवश्यक हो जाता है। भारतीय उच्च शिक्षा के इतिहास पर गौर करने पर हम पाते हैं कि भारत में आधुनिक विश्वविद्यालयी शिक्षा की शुरूआत 1954 में वुड डिस्पेच के सुझावों को अमली जामा पहनाते हुए 1857 में की गई। ब्रिटिश प्रशासन ने 1857 में मद्रास, कलकत्ता व बॉम्बे विश्वविद्यालय खोलें। इसके बाद 1882 में पंजाब व 1887 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय खोले गये। ब्रिटिश प्रशासन द्वारा खोले गये इन विश्वविद्यालयों की विशेषता यह थी कि ये विश्वविद्यालय केवल प्रशासनिक कार्य करते थे। अकादमिक कार्य विश्वविद्यालयों में न होकर देश के विभिन्न कोनों में फैले एफिलिटिड कॉलेजों में होता था। विश्वविद्यालय गैर–शैक्षिक व गैर–आवसीय संस्थाएं थी जिनका मुख्य कार्य केवल परीक्षा आयोजित करना एवं विद्यार्थियों को डिग्री व प्रमाणपत्र देना था। (आनन्द, 1985)[2] बीसवीं सदी के प्रारंभ से ही शिक्षा से जुड़े विभिन्न रिपोर्ट, कमीशन व शिक्षाविदों ने भारतीय शिक्षा के इस स्वरुप की कड़ी ओलाचना की और यह सिलसिला आजादी के बाद से लेकर अब तक चलता नजर आता है। 1902 में भारतीय विश्वविद्यालय कमीशन की रिपोर्ट में भारतीय उच्च शिक्षा के परीक्षा केन्द्रित होने को एक बड़ी खामी के रुपमें देखा गया और शिक्षण अधिगम पर परीक्षा के वर्चस्व की कड़ी आलोचना की गई। इसके बाद 1917–19 में आयी कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग की रिपोर्ट में भी परीक्षा व्यवस्था के इस आधिपत्य को शिक्षण व नवीन विचारों के लिए खतरनाक माना गया। जहाँ एक ओर विभिन्न कमीशन व रिपोर्टों में भारतीय शिक्षा के स्वरुप को लेकर चिंता व्यक्त की जा रही थी वहीं दूसरी ओर भारत में उच्च शिक्षा का विस्तार भी तेजी से हो रहा था। 1947 में देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् भी उच्च शिक्षा का प्रचार व प्रसार तेजी से होता रहा और इसके फलस्वरुप बहुत से विश्वविद्यालय एवं कॉलेज अस्तित्व में आये। परन्तु ये नवीन कॉलेज व विश्वविद्यालय भी उच्च शिक्षा की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं हो पाये। इसका प्रमुख कारण भारतीय समाज में उच्च शिक्षा को रोजगार, सामाजिक प्रतिष्ठा व सुरक्षा प्रदान करने वाले साधन के रुप में देखा जा रहा है, जिसके फलस्वरुप हमारे देश में उच्च शिक्षा पाने की मांग न केवल लगातार बनी रही बल्कि निरन्तर बढ़ती भी रही। लेकिन 1960–65 तक आते–आते इस मांग को पूरा करने के लिए न तो सरकार के पास उचित मात्रा में वित्तीय संसाधन ही उपलब्ध और न ही परम्परागत उच्च शिक्षा संस्थाओं में इतनी सीट व शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध थी कि इस मांग को पूरा किया जा सके। अब प्रश्न यह था कि उच्च शिक्षा की बढ़ती हुई इस मांग को पूरा किया जाए या नहीं और अगर पूरा किया जाए तो कैसे, सीमित साधनों के होते हुए समाज के विभिन्न वर्गों तक उच्च शिक्षा की पहुँच बनाई जाए। इस प्रश्न पर सरकार एवं विभिन्न शिक्षाविदों एवं केब जैसी संस्थाओं में मतभेद था। जहाँ 'केब' का मानना था कि उच्च शिक्षा को केवल उन्हीं व्यक्तियों को प्रदान किया जाना चाहिए जो इसके लायक हैं, वहीं दूसरी और लोकतान्त्रिक व कल्याणकारी राज्य होने के नाते भारत सरकार के लिए उच्च शिक्षा की इच्छा रखने वाले हजारों अभियार्थियों को संसाधनों का अभाव होने के आधार पर नकारना मुश्किल था। साथ ही बहुत से राजनीतिक विद्वानों की मान्यता थी कि लोकतन्त्र की सफलता मुख्य रुप से राज्य द्वारा उसके नागरिकों को प्रदान की गई शिक्षा की गुणवत्ता व

मात्रा पर निर्भर करती है। (आनंद, 1985, पृ. 19)[2] ऐसी स्थिति में भारतीय उच्च शिक्षा में तत्कालीन वित्तीय समस्या को देखते हुए और समाज के विभिन्न वर्गों तक उच्च शिक्षा की पहुँच बनाने को ध्यान में रखते हुए केब द्वारा पत्राचार माध्यम व सांध्य कॉलेज खोलने का सुझाव प्रस्तुत किया गया जिस पर विचार करने के लिए 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' ने 'कोठारी कमेटी' का गठन किया। कमेटी ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया जिसके फलस्वरुप दिल्ली विश्वविद्यालय में पहली बार 1962 में पत्राचार माध्यम की शुरूआत की गई। दिल्ली विश्वविद्यालय के पत्राचार माध्यम की सफलता को ध्यान में रखकर 1964–66 में 'कोठारी कमीशन' ने देश में उच्च शिक्षा की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए अन्य विश्वविद्यालयों में भी पत्राचार कोर्स चलाने की सिफारिश की। (साहू, 2013, पृ. 363) शिक्षा आयोग की रिपोर्ट के अनुसार ''आजकल पूर्व स्नातक स्तर पर विद्यार्थी को या तो पूर्णकालिक आधार पर दाखिल होना पड़ता है या फिर शिक्षा से नितान्त वंचित रहना पड़ता है। इससे कॉलेजों में पूर्णकालिक स्थानों की भारी मांग उत्पन्न हो जाती है और स्तर में गिरावट आने लगती है क्योंकि आवश्यक संख्या में स्थानों की व्यवस्था के लिए साधन उपलब्ध नहीं होते। इसका एक हल तो है कि उपलब्ध साधनों के आधार पर पूर्णकालिक स्थान नितान्त सीमित रखे जाएं और जो लोग विश्वविद्यालय की उपाधि पाने के इच्छुक हैं पर नियमित पाठ्यक्रमों में दाखिला पाने में असमर्थ हैं उनके लिए पत्राचार–पाठ्यक्रम अंशकालिक पाठ्यक्रम, सांध्य पाठ्यक्रम आदि स्थापित किए जाए।'' (शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, पृ. 350–51) शिक्षा आयोग की इस सिफारिश पर अमल करते हुए देश के कई परम्परागत विश्वविद्यालयों में पत्राचार पाठ्यक्रम की शुरूआत कीण गई। मेरठ विश्वविद्यालय में 1969 में पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ एवं पत्राचार व सतत् शिक्षा संस्थान अस्तित्व में आया। मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा बी.ए., बी.कॉम. एवं एम.ए. (अंग्रेजी, अर्थशास्त्रा, हिन्दी, संस्कृत, गणित, समाजशास्त्र, राजनीतिक शास्त्र व इतिहास) के पाठ्यक्रम पत्राचार माध्यम से शुरू किए गए। (भारतीय विश्वविद्यालय संघ, 1986, पृ. 133)[10] मेरठ विश्वविद्यालय में पत्राचार पाठ्यक्रम को प्राइवेट माध्यम के नाम से जाना जाता है लेकिन वास्तव में यह पत्राचार माध्यम ही है जो प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्रदान करता है। (हेंडबुक ऑफ डिस्टेन्स ऐजुकेशन, 2010) पत्राचार माध्यम होने के पश्चात् भी यहाँ पर विद्यार्थियों को पत्राचार माध्यम वाली सुविधाएं प्रदान नहीं की जाती है। पत्राचार माध्यम में छात्रों को अध्ययन सामग्री प्रदान करना, व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम व आन्तरिक मूल्यांकन की सुविधाओं का प्रावधान होना आवश्यक होता है। ''दूरस्थ शिक्षा / पत्राचार माध्यम से शिक्षा आवश्यक रुप से छात्रों को घर पर अध्ययन करने के लिए प्राप्त अनुदेशात्मक सामग्री पर आधरित है जिसे व्यक्ति सम्पर्क कार्यक्रम द्वारा पूरकता व समर्थन प्रदान किया जा सकता है।'' (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, 1986)[10] मेरठ विश्वविद्यालय में इन दिशा निर्देशों का सही प्रकार से पालन नहीं किया जाता है एवं विश्वविद्यालय की तरफ से विद्यार्थियों को किसी प्रकार की न तो कोई अध्ययन सामग्री प्रदान की जाती है और न ही उनसे किसी प्रकार का सम्प्रेषण व सम्पर्क किया जाता है। विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के नाम पर विद्यार्थियों को केवल परीक्षा देने व प्रमाणपत्र देने की सुविधा प्रदान करता है। हालांकि 'हेंडबुक ऑफ कोरोस्पोन्डेन्स कोर्स 1984' में विश्वविद्यालय पत्राचार पाठ्यक्रम की विशेषताओं का वर्णन करते हुए आन्तरिक मूल्यांकन व छुट्टी के दिन शिक्षण सुविधाएं प्रदान करने का दावा करता है। मैंने जब इस दावे की वास्तविकता का पता लगाने का प्रयास किया एवं प्राइवेट माध्यम से पढ़ रहे विद्यार्थियों से इस विषय पर बातचीत की तो पाया कि विश्वविद्यालय की ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कोई शैक्षिक सुविधा नहीं प्रदान की जाती है। अध्ययन सामग्री व व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम तो दूर की बात है उन्हें पाठ्यक्रम व सन्दर्भ सूची भी प्रदान नहीं की जाती है, केवल वर्ष के अंत में उनकी लिखित परीक्षा को ही उनके मूल्यांकन का एकमात्र आधार बनाया जाता है। परीक्षा–प्रणाली की यह महत्ता गैर परम्परागत एवं परम्परागत दोनों माध्यम की उच्च शिक्षा की विशेषता है यह बात मुझे एक बार फिर से स्पष्ट हुई। भारतीय उच्च शिक्षा का परीक्षा केन्द्रित होना कोई नयी बात नहीं है लेकिन जब हम पत्राचार माध्यम में परीक्षा का ऐसा वर्चस्व देखते हैं तो स्थिति और अधिक चिंताजनक इसलिए हो जाती है क्योंकि यहाँ पर विद्यार्थियों के लिए एफिलेटिड् कॉलेज में जाकर पढ़ाई करने की सुविधा उपलब्ध नहीं होती है, जिसके कारण उनका परीक्षा में अच्छे अंक अर्जित करने के लिए पाठ्य–सामग्री एवं तथ्यों को रटना स्वाभाविक हो जाता है। परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने के दबाव के कारण विद्यार्थियों में कुछ नया व रचनात्मक करने की इच्छा शक्ति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है एवं वे अपनी शिक्षा प्रक्रिया का एकमात्र लक्ष्य परीक्षा में पाठ्यक्रम को समुचित रुप से पुर्नत्पादित करना मानने लगते हैं। भारतीय उच्च शिक्षा के इस लक्षण की आलोचना करते हुए मैथ्यू जकारिया तर्क देते हैं कि भारतीय शिक्षा की परम्परा व शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में तथ्यों को याद करने का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है ... बहुत से भारतीयों की मान्यता है कि तथ्यों को याद करके, आवश्यकता पड़ने पर मौखिक व लिखित रुप से प्रस्तुत करने की क्षमता सही समझ बनाने में सहयोग करती है। (जकारिहिया, 1993, पृ.123)[11] ऐसा नहीं है कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर परीक्षा के इस वर्चस्व की ओर किसी शिक्षाविद् का ध्यान नहीं गया हो। समय–समय पर विभिन्न रिपोर्ट एवं कमीशन ने इस व्यवस्था की आलोचना की है। परीक्षाओं में सुधार पर विचार करते हुए शिक्षा आयोग (1964–66) की रिपोर्ट में कहा गया है कि ''उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में कृतित्व के स्तर पर बाह्य–परीक्षा का पंगुकारी प्रभाव इतना भीषण रहा है कि किसी प्रकार की प्रगति के लिए परीक्षाओं में सुधर करना एकदम अनिवार्य हो गया है।'' ऐसी ही कुछ चिंता राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान की रिपोर्ट (2013, पृ. 123) में प्रदर्शित की गई है। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत में उच्च शिक्षा व्यापक रुप से परीक्षा केन्द्रित है। सत्र के अंत में होने वाली परीक्षा विद्यार्थियों को ज्ञान की खोज, अन्वेषण के उत्साह और सीखने की खुशी से पृथक करती है। प्रायः वार्षिक परीक्षा में प्राप्त अंक, प्रतिशत व श्रेणी छात्रों को ऊपरी सूचनाओं को प्राप्त करने की ओर अग्रसर करती है। विभिन्न कमीशनों की रिपोर्ट के बाद भी स्थिति में कोई अधिक परिवर्तन नहीं आया है और आज भी परीक्षा व्यवस्था हमारी उच्च शिक्षा का केन्द्र बनी हुई हैं। कम से कम मेरठ विश्वविद्यालयों द्वारा पत्राचार माध्यम के विद्यार्थियों को केवल परीक्षा संबंधी सुविधाएं प्रदान करना तो इस बात का गवाह है कि प्राइवेट माध्यम से अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों से बात करने पर मेरे मन में अनेक प्रश्न उठे एवं इस समस्या को सही व और अधिक गहराई से समझने के लिए मैंने अपने एम.फिल. के टर्म पेपर के लिए इसी विषय का चयन किया और एक छोटा अध्ययन करने का निर्णय लिया। इस अध्ययन को करने के मेरे प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है :–

शोध उद्देश्य

- विद्यार्थियों द्वारा प्राइवेट माध्यम के चयन के पीछे कारणों को जानना।
- विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को किस प्रकार की परीक्षा संबंधी सुविधा प्रदान की जाती है उन सुविधओं के बारे में पता लगाना।
- इस माध्यम से पढ़ाई करने पर विद्यार्थियों को क्या–क्या सीखने को मिलता है, उसके बारे में पता लगाना।

प्रतिदर्श

इस अध्ययन को करने के लिए मैंने प्राइवेट माध्यम से पढ़ाई कर रहे स्नातक व परास्नातक के तीन–तीन विद्यार्थियों का चयन किया। यह चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श के आधार पर किया गया। उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श इसलिए लिया गया क्योंकि एक तो मेरे पास समय की कमी थी, दूसरे मैं अपने अध्ययन स्नातक एवं परास्नातक दोनों स्तरों से प्रतिभागियों का चयन करना चाहती थी।

शोध विधि

शोध विधि के रुप में गुणात्मक विधि को अपनाया गया। प्रतिदर्श के रुप में चयनित प्रत्येक अभ्यर्थी से खुले प्रश्नों वाली एक प्रश्नावली को भरवाया गया। जब प्रतिभागियों ने यह प्रश्नावली भर दी तो उसके पश्चात् उनके उत्तरों के आधार पर कुछ उपविषय बनाकर इस प्रश्नावली को विश्लेषित किया। विश्लेषण के लिए प्रत्येक विद्यार्थी के उत्तर के आधार पर आवृत्तियों का निर्माण किया गया। विश्लेषण के बाद प्राप्तियों एवं निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया। इन आवृत्तियों को व्याख्यायित किया गया।

प्रश्न. 1 आपने प्राइवेट माध्यम से पढ़ाई क्यों की/कर रहे हैं?

उत्तर. इस प्रश्न के उत्तर में दो महिला प्रतिभागियों का कहना था कि उन्होंने यातायात की समस्या के कारण प्राइवेट माध्यम से पढ़ाई करने का निर्णय किया। ये दोनों प्रतिभागी परम्परागत परिवारों से संबंध रखती है और इनके परिवार वालों का मानना है कि अगर बिना कॉलेज जाए भी समान डिग्री हासिल की जा सकती है तो कॉलेज जाकर पढ़ाई करने की क्या आवश्यकता है? वहीं एक महिला प्रतिभागी ने नौकरी करने के कारण प्राइवेट माध्यम से पढ़ाई करने के विषय में सोचा। एक विद्यार्थी ने इस माध्यम से पढ़ाई करने का निर्णय अधिक अंक प्राप्त करने की लालसा में किया। वहीं दो पुरुष विद्यार्थी सरकारी नौकरी पाने के लिए कोचिंग कक्षाएं लेते थे इसलिए उनके पास रेगुलर माध्यम से पढ़ाई करने का समय नहीं था। अतः उन्होंने प्राइवेट माध्यम को चुना।

प्रश्न. 2 आपने यह विषय क्यों चुना?

उत्तर. इस प्रश्न के उत्तर में दो विद्यार्थियों ने बताया कि उन्होंने इस विषय में उनकी रुचि होने के कारण उन्होंने यह विषय चुना। वहीं दो विद्यार्थियों ने उनकी विषय पर अच्छी पकड़ व सहजता होने के कारण इस विषय को चयन किया। एक विद्यार्थी को यह विषय सरल प्रतीत होता था इसलिए उसने इस विषय का चयन किया। वहीं एक अन्य प्रतिभागी ने विषय से सम्बंधित समस्याओं को जानने के लिए इस विषय का चयन किया।

प्रश्न. 3 क्या दाखिला लेने के बाद आप कॉलेज गये, क्यों? और क्या करने?

उत्तर. इस प्रश्न के उत्तर में पाँच विद्यार्थियों ने बताया कि वे दाखिला मिलने के बाद केवल परीक्षा देने के लिए कॉलेज गये। वहीं एक विद्यार्थी अपने विषय से सम्बंधित प्रश्नों के समाधान के लिए कॉलेज गई लेकिन उसे अपने प्रश्नों का कोई हल प्राप्त नहीं हो सका।

प्रश्न. 4 आपको परीक्षा के समय व दिनांक के बारे में कैसे पता चला?

उत्तर. परीक्षा के समय व दिनांक के बारे में दो विद्यार्थियों ने इन्टरनेट के माध्यम से, दो विद्यार्थियों ने समाचार पत्रों के माध्यम से, वहीं दो विद्यार्थियों ने दोस्तों से पूछकर जानकारी प्राप्त की। विश्वविद्यालय की ओर से उन्हें व्यक्गित रुप से कोई जानकारी नहीं प्रदान की गई।

प्रश्न. 5 परीक्षा की तैयारी के लिए आपको कितना समय मिला?

उत्तर. इस प्रश्न के उत्तर में चार विद्यार्थियों ने बताया कि उन्हें परीक्षा की तैयारी के लिए लगभग एक से दो महीने का समय मिला। वहीं दो विद्यार्थियों ने बताया कि उन्हें 15 दिन से एक महीने तक का समय मिला। परीक्षा की तैयारी का समय प्रत्येक वर्ष अलग–अलग होता है जिस वर्ष दाखिला लेने के फॉर्म जल्दी निकल जाते हैं उस वर्ष अधिक समय मिल जाता है एवं जिस वर्ष देर से निकलते हैं उस वर्ष कम समय मिलता है। परीक्षा का समय विद्यार्थी द्वारा चयनित विषयों के ऊपर भी निर्भर करता है। कुछ विषयों के पेपर जल्दी शुरू हो जाते हैं तो कुछ के देर से शुरू होते हैं एक छात्रा जो अंग्रेजी विषय से एम.ए. कर रही थी ने बताया कि 5 मार्च दाखिला लेने की अंतिम तिथि थी एवं 29 मार्च से उसकी परीक्षाएँ प्रारम्भ हो रही है जिसके कारण वह अच्छे से परीक्षा की तैयारी नहीं कर पा रही है।

प्रश्न. 6 आपने किन किताबों से पढ़ाई की? उन किताबों के बारे में आपको कैसे पता चला?

उत्तर. इस प्रश्न के उत्तर में चार विद्यार्थियों ने बताया कि उन्होंने परीक्षा की तैयारी के लिए सेंपल पेपर व मॉडल पेपर से पढ़ाई की। वहीं दो विद्यार्थियों ने गाइड में से प्रश्न–उत्तर याद करके पढ़ाई की। जब मैंने इन विद्यार्थियों से जानने का प्रयास किया कि उन्हें इन किताबों के बारे में जानकारी कहाँ से प्राप्त हुई तो तीन विद्यार्थियों ने बताया कि उन्होंने किताबों की दुकान पर पूछकर इन किताबों का चयन किया। वहीं दो विद्यार्थियों ने अपने दोस्तों एवं रिश्तेदारों से पूछकर किताबें खरीदी। वहीं एक छात्रा ने एडमिशन फार्म में लिखे कोड के अनुसार दुकान वाले से किताबें खरीदीं। विश्वविद्यालय की ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कोई अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं हुई। विद्यार्थियों ने भी केवल सेंपल पेपर्स व गाइड को ही पढ़ाई के लिए इसलिए चुना क्योंकि एक तो उनके पास समय का अभाव होता है और दूसरे सेंपल पेपर से ही लगभग सम्पूर्ण पेपर मिल जाता है।

प्रश्न. 7 क्या लिखित परीक्षा के अलावा आपका किसी ओर तरीके से मूल्यांकन हुआ, उसमें क्या हुआ?

उत्तर. इस प्रश्न के उत्तर में स्नातक स्तर के तीन विद्यार्थियों ने बताया कि उनका मूल्यांकन केवल लिखित परीक्षा के आधार पर हुआ, वहीं परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों ने बताया कि

वैसे तो उनका मूल्यांकन मुख्यतः लिखित परीक्षा के आधार पर हुआ लेकिन साथ ही सौं अंकों की एक मौखिक परीक्षा भी हुई। एक छात्रा ने बताया कि मौखिक परीक्षा में उनसे उनके पिछले वर्ष के लिखित परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर परीक्षक ने प्रश्न पूछे जिन विद्यार्थियों के अंक पूर्वलिखित परीक्षा में अच्छे थे उनसे विषय से सम्बंधित कठिन प्रश्न पूछे गयें वहीं जिन विद्यार्थियों के अंक कम थे उनसे अपेक्षाकृत हल्के व सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे गये। वहीं दो विद्यार्थियों ने बताया कि मौखिक परीक्षा में उनसे पाठ्यक्रम पर आधरित पूछे गये।

प्रश्न. 8 क्या आप वही परीक्षा देते हैं जो रेगुलर छात्र देते हैं। प्रश्न पत्र वही होता है या अलग?

उत्तर. चार विद्यार्थियों का मानना था कि प्राइवेट व रेगुलर माध्यम की परीक्षा एक साथ होती है एवं प्रश्नपत्र भी एक समान होता है केवल मौखिक परीक्षा भिन्न होती है। वहीं एक विद्यार्थी को इस विषय में जानकारी का अभाव था। एक विद्यार्थी का मानना था कि प्राइवेट व रेगुलर विद्यार्थियों की परीक्षा एवं प्रश्नपत्र अलग होते हैं।

प्रश्न. 9 क्या आप अपने प्रथम प्रयास में सभी विषयों में पास होने में सफल रहे?

उत्तर. चार विद्यार्थियों ने बताया कि वे अपने प्रथम प्रयास में सभी विषयों में पास होने में सफल रहे। वहीं दो विद्यार्थियों ने अपने प्रथम प्रयास में परीक्षा में सफलता नहीं प्राप्त कर पायें। उन्होनें इसका कारण परीक्षा की तैयारी के लिए समुचित समय का ना मिल पाना रहा।

प्रश्न. 10 किसी विषय में फेल होने पर विश्वविद्यालय ने आपके लिए क्या प्रावधान किये?

उत्तर. इस प्रश्न के उत्तर में पाँच विद्यार्थियों ने बताया कि किसी विषय में फेल होने की स्थिति में कुछ महीनों के बाद दूसरी बार परीक्षा देने की सुविधा होती है वहीं एक विद्यार्थी को इस विषय में कोई जानकारी नहीं थी।

प्रश्न. 11 क्या आपने अपने आसपास किसी को नकल करते देखा?

उत्तर. इस प्रश्न के उत्तर में चार विद्यार्थियों ने बताया कि परीक्षा के दौरान कुछ विद्यार्थी जहाँ छोटी–छोटी पर्चियों के माध्यम से नकल करते हैं वहीं कुछ विद्यार्थी एक–दूसरे से पूछकर थोड़ी–बहुत नकल करते हैं। दो विद्यार्थियों का मानना था कि परीक्षा में बिल्कुल नकल नहीं होती है।

प्रश्न. 12 प्राइवेट माध्यम से पढ़ाई करने पर आपको क्या–क्या सीखने को मिला?

उत्तर. इन प्रश्न के उत्तर में तीन विद्यार्थियों का मानना था कि इस माध्यम से पढ़ाई करने पर उन्हें ज्यादा कुछ सीखने को नहीं मिला हाँ डिग्री जरूर मिल गई। लेकिन इस माध्यम से पढ़ाई करने पर वे अलग से कुछ नहीं सीख पायें वहीं दो विद्यार्थियों का मानना था कि इस माध्यम से पढ़ाई करके उन्हें केवल अधूरा ज्ञान ही प्राप्त हुआ वे कुछ नवीन इसलिए नहीं सीख पायें क्योंकि उन्होंने सारी पढ़ाई स्वयं ही की। वही एक विद्यार्थी ने बताया कि इस माध्यम से पढ़ाई करने पर उन्हें स्वअध्ययन की महत्ता का पता चला।

प्राप्तियाँ

- पत्राचार माध्यम उच्च शिक्षा की पहुँच ऐसे विद्यार्थियों तक बनाने में सफल हुआ है जो सामाजिक, अकादमिक, आर्थिक व भौगोलिक कारणों से उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते हैं।
- प्राइवेट माध्यम के छात्रों को विश्वविद्यालय की ओर से कोई शैक्षिक व अधिगम संबंधी सुविधा प्रदान नहीं की जाती है। विश्वविद्यालय का कार्य केवल परीक्षा आयोजित कराना व डिग्री एवं प्रमाण पत्र प्रदान करना होता है।
- प्राइवेट माध्यम में मुख्य रुप से लिखित परीक्षा के आधार पर विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है। परास्नातक स्तर पर मौखिक मूल्यांकन का प्रावधान है लेकिन उसका कोई निश्चित आधार या पैमाना नहीं हैं।
- प्राइवेट माध्यम में विद्यार्थियों की विशिष्ट आवश्यकताओं एवं परिस्थिति को ध्यान में रखकर प्रश्न–पत्र तैयार नहीं किये जाते है।
- विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तैयारी के लिए समुचित समय विद्यार्थियों को प्रदान नहीं किया जाता है, जिसके कारण रटन्त ज्ञान के बढ़ावा मिलता है एवं परीक्षा में नकल होने व विद्यार्थियों के अनुत्तीर्ण होने की संभावना अधिकहोती है।
- प्राइवेट माध्यम में किसी भी प्रकार की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के अभाव एवं परीक्षा केन्द्रित प्रणाली होने के कारण विद्यार्थी सीखने व ज्ञान की प्रक्रिया से नहीं जुड़ पाते हैं, जिसके फलस्वरुप डिग्री प्राप्त करने पर भी उन्हें उस डिग्री के स्तर के अनुरुप सीखने को नहीं मिलता है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पत्राचार माध्यम उच्च शिक्षा को व्यापक व विस्तृत स्तर पर उपलब्ध कराने के माध्यम के रुप में उभरा है। पत्राचार माध्यम ने उच्च शिक्षा की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने में अपना विशेष योगदान दिया और उच्च शिक्षा की इच्छा रखने वाले उन तमाम विद्यार्थियों तक भी इसकी की पहुँच बनाई जो विभिन्न सामाजिक, आर्थिक व भौगोलिक कारणों से पहले उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते थे। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष एक बार फिर से उच्च शिक्षा में गुणवत्ता और समानता के तनाव को उजागर करते है और हमें जे.पी. नाइक की प्रसिद्ध पुस्तक 'समानता, गुणवत्ता तथा संख्यात्मकता एक दुर्ग्राह त्रिकोण की याद दिलाते हैं। इस पुस्तक में नाइक प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में गुणवत्ता व संख्यात्मकता के बीच जैसा विपरीत संबंध देखते हैं ऐसा ही संबंध हमें आज पत्राचार माध्यम के संदर्भ में नजर आता है। यह विपरीत संबंध उस समय और अधिक गहन व गंभीर हो जाता है जब पत्राचार माध्यम के लिए निर्धारित आवश्यक शर्तों एवं दिशा–निर्देशों की अनदेखी की जाती है। मेरठ विश्वविद्यालय में पत्राचार माध्यम की निरन्तर गिरती हुई गुणवत्ता इसी स्थिति की ओर संकेत करती है। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष गैर–परम्परागत उच्च शिक्षा में भी परीक्षा प्रणाली के वर्चस्व को उजागर करते हैं और सिद्ध करते हैं कि उच्च शिक्षा चाहे गैर–परम्परागत माध्यम से प्राप्त की जाए या परम्परागत साधनों के माध्यम से विद्यार्थियों के मूल्यांकन का एक मात्रा आधार परीक्षा ही होता है। सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के परीक्षा केन्द्रित होने के कारण उच्च शिक्षा का अनुभव विद्यार्थियों के लिए, परीक्षा में पुर्नत्पादित करने के उद्देश्य से तथ्यों व प्रश्नों को याद करने तक सिमट कर रह जाता है। परीक्षा के पाठ्यक्रम व अधिगम पर इसी प्रभाव के कारण

विद्यार्थी उच्च शिक्षा से न ऐसा ज्ञान अर्जित कर पाते हैं जिसका वे अपने जीवन में प्रयोग कर सके न ही उनमें उच्च शिक्षा के स्तर के अनुरुप कौशलों का विकास हो पाता है। उनका सारा ध्यान इसी बात पर लगा रहता है कि वे किस प्रकार से परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करके अधिक अंक हासिल कर सकते हैं। प्रसिद्ध (अर्थशास्त्री रोनाल्ड डोर अपनी पुस्तक 'दि डिप्लोमा डिजीज' में शिक्षा पर परीक्षा के इसी कुप्रभाव की चर्चा करते हैं उनका मानना है कि परीक्षा उन्मुख प्रणाली के कारण शिक्षा ज्ञान के स्थान पर योग्यता ग्रहण करने की प्रक्रिया बनकर रह जाती है और योग्यता ग्रहण करने की इस प्रक्रिया में विपरीत रुप से विद्यार्थी का सारा ध्यान ज्ञान प्राप्त करने की बजाय प्रमाण पत्र प्राप्त करने पर होता है। वह ज्ञान, ज्ञान के लिए नहीं प्राप्त करता है और न ही वास्तविक जीवन में उसका प्रयोग करता है बल्कि उसका एकमात्र उद्देश्य परीक्षा में उस ज्ञान को पुर्नत्पादित करना होता है। (डोर 1976, पृ. 8) अब प्रश्न यह उठता है कि यदि चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ द्वारा विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम, अध्ययन सामग्री व संदर्भ सूची जैसी कोई सुविधा नहीं प्रदान की जाती है और सत्र के अंत में होने वाली लिखित परीक्षा के आधार पर ही उनका मूल्यांकन किया जाता है तो भी छात्रों एवं विश्वविद्यालय प्रशासन को इससे कोई विशेष परेशानी क्यों नहीं होती है। इस प्रश्न का जवाब ढूंढने में कहीं न कहीं इन्द्रा देवा का 1992 में उच्च शिक्षा पर लिखा गया लेख हमारी मदद करता है उनका मानना है कि भारत में मुख्य रुप से पुरुष व महिलाएँ उच्च ज्ञान सीखने के लिए नहीं वरन् अपेक्षाकृत विशेष सुविधा प्राप्त मध्यम वर्ग में अपनी जगह बनाने के लिए भी विश्वविद्यालय के दरवाजे पर दस्तक देते हैं। (देवा, 1982)[4] इस प्रकार उच्च शिक्षा चाहे वह परम्परागत माध्यम से प्राप्त की जाए या गैर–परम्परागत माध्यम से उसे आधुनिकता, सामाजिक प्रतिष्ठा, सामाजिक सुरक्षा व गतिशीलता के साथ–साथ रोजगार दिलाने वाली प्रक्रिया माना जाता है। उच्च शिक्षा के इसी गुण के कारण अधिक से अधिक लोग उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, भले ही उनमें उसे प्राप्त करने की योग्यता एवं गुण हों या न हों। समाज के उच्च शिक्षा को लेकर ऐसे दृष्टिकोण होने के कारण ही विश्वविद्यालय द्वारा गुणवत्ता की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है और विशाल जनसमूह तक उच्च शिक्षा पहुँचाने के लिए आरम्भ किए गये पत्राचार माध्यम जैसे प्रावधान उच्च शिक्षा के नाम पर महज औपचारिकता बनकर रह जाते हैं। जिसमें दाखिला लेकर विद्यार्थी आवश्यक योग्यता तो प्राप्त कर सकते हैं लेकिन उस योग्यता के अनुरुप उनमें ज्ञान व कौशलों का विकास होने की संभावना बहुत कम होती है। ऐसी स्थिति में यदि पत्राचार माध्यम छात्र–छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं तो उन्हें पत्राचार माध्यम के लिए आवश्यक शर्तों जैसे – समय पर अध्ययन सामग्री को छात्रों तक पहुँचाना, व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम आवधिक आन्तरिक मूल्यांकन व इन छात्र–छात्राओं की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुरुप पाठ्यक्रम का निर्माण करने की ओर गंभीरता से ध्यान देना होगा ताकि पत्राचार माध्यम विद्यार्थियों के लिए नवीन ज्ञान सीखाने का माध्यम बन सकें और यह तभी संभव हो पायेगा जब देश में स्थित सभी विश्वविद्यालय पत्राचार माध्यम के महत्व को स्वीकार करेंगे और उसे परम्परागत माध्यम के समान दर्जा देंगे।

References

1. Airwan JW. College Eduction in India. Bombay: Manktalas, 1967.
2. Anand, Satyapal. University without Walls: Correspondence Education in India. New Delhi: Vikas Publication House Pvt. Ltd, 1985.
3. Association of Indian University. Handbook on Distance Education, AIU, New Delhi, 2010.
4. Deva, Indra. Latent Functions of Higher Education in India', Journal of Higher Education. 1982; 7:211-217.
5. Dore Ronald. The Diploma Disease: Education Qualification and Developoment, London: George Allen and Unwin Ltd, 1978.
6. NCERT. Education and National Development – Report of Education Commission 1964-66. Higher Education. New Delhi. 1970, 3.
7. Sahoo PK. Higher Education at a Distance. New Delhi: Sanchar Publication House, 1993.
8. Sahoo PK, Yadav D, Das BC. Quality in Higher Education Issue and Perspective. New Delhi: Uppal Publication, 2012.
9. Tilak, Jandhyalaya, B.G. Higher Education in India: In searh of Equality, Quality and Quantity. New Delhi: Orient Blackswan Private Limited, 2013.
10. University Grant Commission. Annual Report, 1986.
11. Zachariah Mathew. 'Examinatoin Reform in Traditional Universities: A Few Step Forward, Many Steps Book', Perspective on Higher Education in India. 1993; 26(1):123.